VIDYAWARTA®

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Issue-36, Vol-01 Oct. to Dec-2020
Peer Reviewed International Referred Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

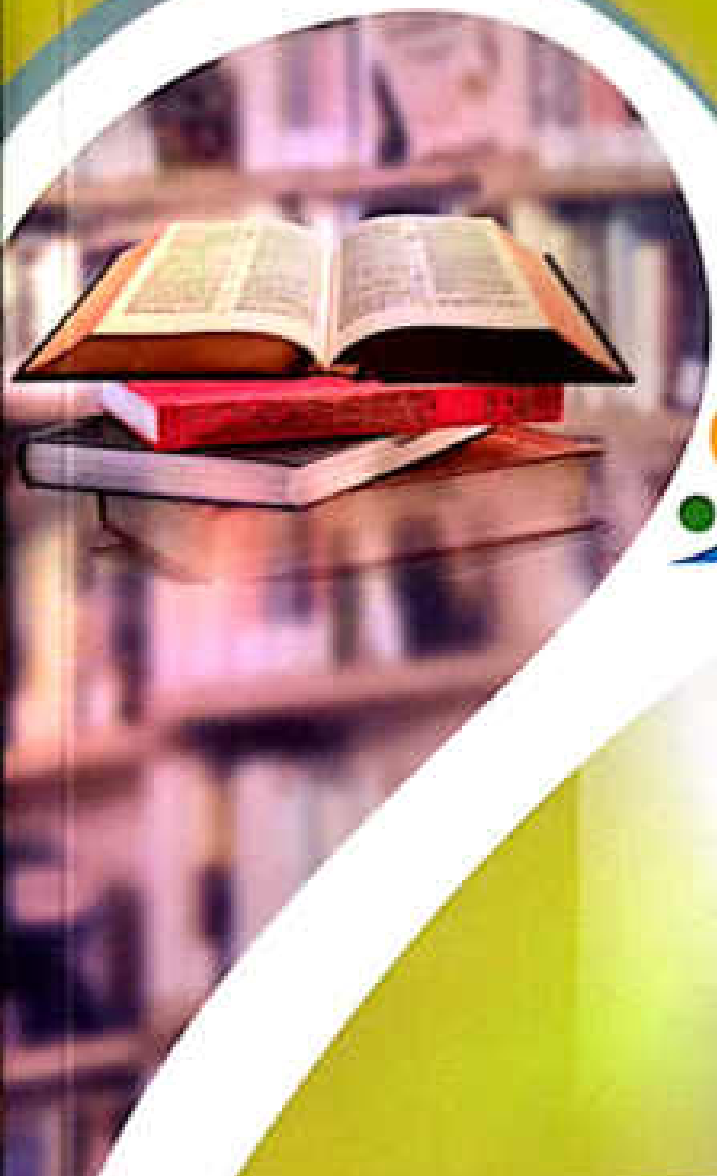

Scanned with CamScanner

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

27) आधुनिक भारतीय भाषा विश्लेषण में पाणिनि व्याकरण की भूमिका
डॉ० कुमारी माला, पटना ||108

28) मृदुला गर्ग का उपन्यास 'अनित्य' : एक अनुशीलन
डॉ. जयलक्ष्मी एफ. पाटील, धारवाड़ ||111

29) प्रवासी साहित्यकार सुषमवेदी की कहानी 'कितने–कितने अतीत' में वृद्ध विमर्श
डा. पवन कुमार शर्मा, धारीवल ||115

30) अस्पृश्यताया : निवारणे अम्बेदकरस्य योगदानम्
बृज मोहन कुमार, पटना ||117

31) नारी पात्रों में द्वंद्व एवं संकल्प की सशक्त हस्ताक्षर : कृष्णा सोबती
एस. कुमार गौर & डॉ० (श्रीमती) बी० एन० जागृत, राजनांदगाँव, छ० ग० ||121

32) नाथपंथ का हठयोग
डा० प्रवीण कुमार गुप्त, गोरखपुर (उ०प्र०) ||126

33) मुक्तिबोध की कविताओं में मजदूर : कोरोना के संदर्भ में
डॉ. आशीष कुमार गुप्ता, जिला– बलरामपुर (छ०ग०) ||130

34) बच्चों के शैक्षिणिक विकास के लिए वातावरण निमार्ण में घरेलू लिनन की वर्तमान ...
डॉ० सुमन मिश्रा & प्रिया जायसवाल, वाराणसी ||133

35) भारतीय संस्कृति और प्रवासी साहित्य
डॉ. लवलीन कौर, लुधियाना ||137

36) समतामूलक समाजव्यवस्था की संवाहिका : समकालीन हिंदी दलित कविता
संतोष नागरे, जि. बीड ||143

37) 'असनी' (फतेहपुर) के कवि : आचार्य सेवक और उनका वाग्विलास
डॉ० उत्तम कुमार शुक्ल, फतेहपुर ||146

38) शैलेश मटियानी का जीवन संघर्ष और साहित्य सेवा
सुविया फैसल & डॉ. रेशमा अंसारी, रायपुर (छ.ग.) ||151

39) गोविन्द मिश्र की कहानियों में सामाजिक यथार्थ
सुदेश कान्त, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) ||155

40) वैदिक साहित्य की भौगोलिक पृष्ठभूमि
Surendra Kumar ||159

Scanned with CamScanner

रचा जा रहा साहित्य, उस देश के परिवेश से ही हमारा परिचय ही नहीं कराता वरन उसकी भाषा से शब्द भी ग्रहण कर रहा है। फलस्वरूप, हिंदी का भी एक नया स्वरूप विकसित हो रहा है और उस हिंदी में लिखे गए साहित्य का एक अलग ही स्वाद है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. उषा प्रियवंदा : अंतर्वंशी : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. २०००, पृ. ७०

२. मंजुकपूर : आप्रवासी, रैण्डम हाउस इंडिया, नोएडा, सं. २००९, पृ. १०४

३. महेन्द्र भल्ला : उड़ने से पेशतर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. २०१०, पृ. ७४

४. अभिमन्यु अनत : लाल पसीना, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं. २०१५, पृ. ४३

५. अभिमन्यु अनत : और पसीना बहता रहा, राजपाल एंड संस, दिल्ली, सं. २०१४, पृ. ७९

६. अभिमन्यु अनत : शब्द–भंग, हिन्दी बुक सेण्टर, नई दिल्ली, सं. २०१२, पृ. ८४

७. अभिमन्यु अनत : लाल पसीना, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं. २०१५, पृ. ४९

८. रामदेव धुरंधर : पूछो इस माटी से, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. २०१०, पृ. १३४

९. सुषम बेदी : लौटना, पराग प्रकाशन, दिल्ली, नई दिल्ली, सं. २०११, पृ. ११२

१०. अभिमन्यु अनत : लाल पसीना, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं. २०१५, पृ. ६२

११. अभिमन्यु अनत : गांधी जी बोले थे, यूनिस्टार बुक्स, चंडीगढ़, सं. २०१६, पृ. १५४

१२. योगेश कुमार : वेदना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. २००९, पृ. १७

१३. मीना पॉल : कुछ गांव–गांव कुछ शहर–शहर, यश पब्लिकेशन्स, दिल्ली, सं. २०१५, पृ. १०२

१४. दिव्या माथुर : शाम भर बातें, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. २०१२, पृ. ५४

१५. सुधा ओम ढींगरा : कौन सी जमीन अपनी, भावना प्रकाशन, दिल्ली, सं. २००४, पृ. ६९

१६. सुषम बेदी : सूरज क्यों निकलता है, अभिरुचि प्रकाशन, दिल्ली, सं. २०१०, पृ. ११५

36

समतामूलक समाजव्यवस्था की संवाहिका : समकालीन हिंदी दलित कविता

संतोष नागरे
सहा.प्रा.-हिन्दी विभाग,
र.भ. अट्टल महाविद्यालय, गेवराई, जि. बीड

****

समकालीन हिंदी कविता हाशिये पर रखे गये समूह की पीड़ा की बेबाक अभिव्यक्ति है। वर्णव्यवस्था एवं जातिव्यवस्था द्वारा उपेक्षित, अपमानित एवं तिरस्कृत समूह को दलित नाम से अभिहित किया जाता है। दलित सदियों से सामाजिक भेदभाव के शिकार रहे हैं। अतः सामाजिक भेदभाव का विरोध करते हुए सामाजिक समता प्रस्थापित करना दलित कविता की मूल संवेदना रही है। कँवल भारती इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं, "दलित विमर्श के केंद्र में वे सारे सवाल हैं, जिनका सम्बन्ध भेदभाव से है, चाहे वह भेदभाव जाति के आधार पर हो, रंग के आधार पर हो, नस्ल के आधार पर हो, लिंग के आधार पर हो या फिर धर्म के ही आधार पर क्यों न हो।"१

दलित कविता की पृष्ठभूमि बनाने में महात्मा गौतम बुद्ध, कबीर, रैदास, नामदेव, नानक आदि संतों के साथ महात्मा फुले, राजर्षि शाहू, डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर आदि समाजसुधारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर जी की विचारधारा दलित कविता का प्राणतत्त्व है। डॉ.अम्बेडकर जी की 'शिक्षा', 'संगठन' और 'संघर्ष' की त्रिसूत्री को आधार बनाकर दलित समाज आगे बढ़ रहा है। 'नकार', 'विरोध' और 'विद्रोह' दलित कविता के सौंदर्य को निखारते हैं। समकालीन हिंदी दलित कविता जाति-पाँति, ऊँच-नीच, आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग- नरक, जन्म-पुनर्जन्म, धार्मिक पाखण्ड, कर्मकांड, कर्मफल, छुआछूत का समर्थन करनेवाले धर्मग्रंथ तथा उनके समर्थकों को फटकारती हुई समतामूलक समाजव्यवस्था की परिकल्पना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। समकालीन हिंदी दलित कविता की इस महत्वपूर्ण भूमिका को अधोरेखित करते हुए रामचंद्र कहते हैं, "दलित कविताएँ समता और करुणा का ऐसा काव्यलोक रचती है, जहाँ किसी भी प्रकार का अन्याय, घृणा, हिंसा, एवं विषमता का कोई स्थान न हो। दलित वेदना और अस्मिता से गूँथी

Scanned with CamScanner

हुई दलित चेतना की कविताएँ यथास्थितिवाद को तोड़ती है, भंग करती है। सौंदर्यशास्त्रीय मानदंडों की परवाह किए बगैर सच को लिखना, कहना, बताना, सुनाना और अहसास कराना तथा सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा पैदा करना दलित कविता का मुख्य ध्येय है। दलित चेतना की यह व्यापक दृष्टि बुद्ध, बौद्ध परम्परा, संतों, ज्योतिबा फुले, डॉ.अम्बेडकर और अन्य सामाजिक परिवर्तन के प्रेरणा स्त्रोतों से मिली है। असमानता, अपमान, अत्याचार और अन्यायपरक व्यवस्था को समाप्त कर समतामूलक समाजव्यवस्था की परिकल्पना दलित कविता की मूल संवेदना है।"२ इस संवेदना का विस्तार समकालीन हिंदी दलित कविता के कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, कैवल भारती, सूरजपाल चौहान, मोहनदास नैमिशराय, सुशीला टाकभौरे, श्यौराजसिंह 'बेचैन', प्रेमशंकर, असंग घोष, रजनी तिलक आदि की कविताओं में स्पष्ट रुप से देखने को मिलता है।

वर्णव्यवस्था से निर्मित जातिव्यवस्था के द्वारा मनुष्य-मनुष्य के बीच विषमता के बीज बोये गये। जिसके कारण मनुष्य का मूल्यांकन उसके कर्म के आधार पर न होकर जन्म से प्राप्त होनेवाली 'जाति' के आधार पर किया जाता रहा है। 'जाति' को लेकर सभ्य सवर्णों द्वारा दलितों के साथ की जानेवाली अभद्रता की पोल खोलते हुए प्रेमशंकर कहते है,-

"वे सभ्य है
आदमी से / हाथ मिलाने के बाद
वे...../हाथ धोते हैं, मांजते है
और फिर / मुस्कुराकर कहते है.....
'हम एक है'
फिर हाथ धोते है, मांजते / ताकि
हाथ में आदमी की
'जाति' न छप गयी हो।"३

इस देश की एकता में अनेकता लानेवाली जातिव्यवस्था के द्वारा दलितों के साथ सदियों से जानवरों से भी बदतर सलूक किया जाता रहा है। जाति के अहंकार से ही समाज में ऊंच-नीच, छुआ-छूत की भावनाएँ पायी जाती है। देश में बढ़ती ऑनर किलिंग की घटनाएँ मनुष्य में पायी जानेवाली जातिगत अहंकार की सूचक है। इसीकारण सी.बी. भारती जी को मनुष्य की अपेक्षा 'परिन्दे' अधिक प्रिय है, क्योंकि उनमें जातियाँ और उसका अहंकार नहीं होता। 'परिन्दों' के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों को आईना दिखाते हुए सी.बी. भारती कहते है,-

"परिन्दे / चहचहाते है
परिन्दे जहाँ चाहते है उड़ जाते है
परिन्दे घूमते हैं आकाश में उन्मुक्त
परिन्दे गुनगुनाते गीत गाते है
परिन्दों में एकता है
परिन्दे छोटे-बड़े का मन में भाव नहीं लाते है
क्योंकि परिन्दों में जातियाँ नहीं होती
जाति का अहंकार नहीं होता।"४

शहरों की अपेक्षा गाँव में जातिव्यवस्था की समस्या अधिक तीव्र रुप में देखने को मिलती है। संविधान के विपरीत स्थितियाँ राजनीति में पायी जाती है। दलित महिला का प्रधानी के चुनाव में खड़ा होने पर सामने आयी गाँववालों की प्रतिक्रियाओं से दलितों को पिछड़ा रखने की सवर्ण मानसिकता की बू आने लगती है। डॉ.कुसुम वियोगी 'चुनाव' कविता के माध्यम से इन विसंगतियों को बेनकाब करती हुई कहती है,-

"गाँव की / दलित महिला का
प्रधानी के 'चुनाव' में / खड़ा होना ही
गाँव वालों को इतना खल गया
जैसे / किसी विधवा के कोख में
कोई विषाणु पल गया।"५

जातिव्यवस्था ने मानवीय मूल्यों को तहस-नहस कर दिया है। स्वार्थभरी बद्धविरया स्वातंत्र्य, बन्धुता एवं समता के अभाव में बहुजनों के शोषण की छलविद्या बनकर रह गयी है। जिसकी पोल खोलते हुए सुशीला टाकभौरे कहती है,-

"अगर जीवन में कुछ करना चाहते हो तो
सीखिए चाकू पटुता, साजिश और बेइमानी।"६

इस छल और छद्म के विरुध्द प्रतिरोध का स्वर दलित कविता में आरंभ से ही दिखाई देता है। जो बुध्द, फुले और अम्बेडकर की सामाजिक समता एवं मानवीयता का पक्षधर रहा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि इस संदर्भ में ठीक ही कहते है,- "दलित साहित्य प्रतिरोध का साहित्य नहीं है। यह तो समाज में मानवीय मूल्यों, सरोकारों, मनुष्यता, स्वतंत्रता, बन्धुता, समता का पक्षधर है। यह प्रतिरोध में विश्वास नहीं करता। दलित डॉ.अम्बेडकर, बुध्द, फुले की मानवीय पक्षधरता को अपने आदर्श मानता है।"७ सदियों से ही इस छल और छद्मभरी शोषणकारी व्यवस्था ने अपने विरुध्द उठनेवाली आवाज को बड़ी बेरहमी से दबाया एवं कुचला। 'शम्बूक' इसी शोषणकारी व्यवस्था के शिकार का प्रतीक है। जो दलितों की स्वतंत्रता, बन्धुता, समानता एवं न्याय के लिए संघर्षरत था। जिसकी राम के हाथों हत्या करवाकर देवताओं द्वारा पुष्प वर्षा किये जाने की साजिश की पोल खोलते हुए कैवल भारती कहते है,-

Scanned with CamScanner

"शम्बूक / तुम्हें नहीं मालूम
तुम्हारे वध पर / देवताओं ने पुष्प वर्षा की थी।
कहा था- बहुत ठीक, बहुत ठीक।
क्योंकि तुम्हारी हत्या
स्वतंत्रता, समानता और न्याय बोध की हत्या थी।"८

इस शोषणकारी व्यवस्था ने हमेशा अपने स्वार्थ के लिए धर्म का आधार लेकर सामाजिक विषमता को बढ़ावा दिया। परिणाम स्वरुप मानवता के अभाव में विकृत बना धर्म शोषण का माध्यम बना। 'अस्थि-विसर्जन' कविता के माध्यम से ओमप्रकाश वाल्मीकि मृत्यु- पश्चात मुक्ति के लिए किये एवं करवाये जानेवाले धार्मिक पाखण्ड पर प्रहार करते हैं। 'अस्थि-विसर्जन' के समय अस्थियों के बीच रखे सिक्कों और रुपयों पर विसर्जन से पूर्व ही झपट्टा मारने के लिए गड़ी पंडे की गिध्द नजरों की सच्चाई को कवि समझ चुका है। अतः गंगा में न नहाने तथा शोषण का शिकार होने से बचने की अपनी संकल्पबध्दता को दोहराते हुए ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं,-

"इसलिए तय कर लिया है मैंने
नहीं नहाऊँगा ऐसी किसी गंगा में
जहाँ पंडे की गिध्द नजरें गड़ी हो
अस्थियों के बीच रखे सिक्कों
और दक्षिणा के रुपयों पर
विसर्जन से पहले ही
झपट्टा मारने के लिए बाज की तरह।"९

सदियों से वर्णव्यवस्था एवं जातिव्यवस्था के पक्षधरों ने आम-आदमी को धर्म की भुलभुलैया में उलझाए रखा। दलित कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से इस उलझन को सुलझाने का सार्थक प्रयास किया है। राम चंद्र इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं,- "परंपरागत एवं ऐतिहासिक रुप से हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति के मानक ईश्वर के विविध रुप, देवी-देवता, अवतार, आत्मा- परमात्मा, परलोक, नियति, भूत-प्रेत, छल, प्रपंच, कर्मकांड, अंधविश्वास, धर्मांधता और वर्चस्व की कूटनीति को बेनकाब करती हुई दलित कविताएँ साहित्य एवं संस्कृति का नया इतिहास लिख रही है।"१०

आज ईश्वर मानवता का नहीं बल्कि धर्म के धंधे का एक ट्रेड नेम बनकर रह गया है। ईश्वर के नाम पर श्रध्दा का धंधा करनेवाले दलालों की कुटिलता और कमीनेपन को जयप्रकाश कर्दम बखूबी समझ चुके है। ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हुए जयप्रकाश कर्दम कहते है,-

"ईश्वर, तेरे सत्य और शक्ति को मैं अब जान गया हूँ
तेरे दलालों की कुटिलता और कमीनेपन को भी पहचान गया हूँ
शुक्र है तू कहीं नहीं है
केवल धर्म के धन्धे का / एक ट्रेड नेम है
अगर सचमुच तू कहीं होता
तो सदियों की अपनी यातना का हिसाब
मैं तुझसे जरुर चुकता।"११

मानवीय मूल्यों को दरकिनार कर इस शोषणकारी व्यवस्था ने दलितों को मानवाधिकार से वंचित रखा। दलितों के श्रम का शोषण कर यह व्यवस्था अपनी नींव मजबूत करती रही। दलितों का खून चूसते हुए उनकी स्त्री, बहन और पुत्री की इज्जत के साथ खेलना, विरोध करने पर उनके घर-बार को आग लगाने जैसी उत्पीड़न की घटनाएँ देश के हर कोने में आये दिन घटित होती है। दलितों के इस नारकीय जीवन तथा सदियों के संताप को कैलाश भारती ने 'तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती ?' कविता के माध्यम से अधोरेखित किया है। अपनी आपबीती सुनाते हुए कैलाश भारती सवर्णों से सवाल करते हैं की यही पीड़ा अगर तुम्हें झेलनी पड़ती 'तब तुम्हारी निष्ठा क्या होती ?'-

"यदि यह विधान लागू हो जाता कि
तुम्हारे जीवन का कोई मूल्य नहीं।
कोई भी कर सकता है तुम्हारा वध
ले सकता है, तुमसे बेगार
तुम्हारी स्त्री, बहिन और पुत्री के साथ
कर सकता है बलात्कार
जला सकता है घर बार
तब, तुम्हारी निष्ठा क्या होती ?"१२

इसीतरह असंग घोष ने 'पर ये नहीं' कविता के माध्यम से दलितों के साथ किये जानेवाले अमानवीय व्यवहार की पोल खोलते हुए उनके मानवाधिकार को लेकर आवाज उठायी है। दलित स्त्री देह को अपनी बपौती समझकर अपनी वासना का ज्वार उतारने के लिए किये जानेवाले सामूहिक बलात्कार और तत्पश्चात उन्हें दिखाई देनेवाली जातिगत शुध्दता की पोल खोलते हुए असंग घोष कहते हैं,-

"तुम्हारे लिए / स्त्री थी / केवल एक देह
जिसके भूगोल पर / लिखते रहे तुम / कविता
नापते रहे / उसके उतार / उसके चढ़ाव / उसके उभार....
जब चाहा / उस पर उतारते रहे तुम / अपनी वासना का ज्वार
कभी अकेले / कभी सामूहिक
जब उसे अपनाने का समय आया
तो तुम परखने लगे / उसकी शुध्दता
जैसे देसी घी खरीदना हो / बाजार से।"१३

सदियों से अमानवीय और दमनकारी जातिव्यवस्था की शोषण चक्की में पिसता दलित अपनी चुप्पी को तोड़ रहा है। अतः वह नकार,

Scanned with CamScanner

विरोध और विद्रोह के अस्त्र-शस्त्रों के माध्यम से धार्मिक पाखण्ड, छुआ-छूत, भेदभाव का पाठ पढ़ाते ग्रंथ आदि के विरुध्द शंखनाद कर इस शोषणकारी व्यवस्था को जड़ से मिटाकर आनेवाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित करना चाहता है। कमलेश भारती कहते है.-

"मैं अब कल को नहीं दोहराने दूँगा
मुझे अब किसी भी तरह का दुख सहन नहीं है
मैं लड़ूँगा अब दुख करनेवाले उस स्वभाव से, भय से
मैं धार दूँगा अपने अस्त्र-शस्त्रों को
प्रत्यंचा चढ़ाऊँगा तीर पर
शंखनाद करूँगा इस अन्यायपूर्ण / भेदभावपूर्ण
अमानवीय और दमनकारी व्यवस्था के विरुध्द।"१४

निष्कर्ष :-

दलित साहित्य बहुजन समूह की मुक्ति की कामना का साहित्य है। समकालीन हिंदी दलित कविता सदियों से वर्णव्यवस्था द्वारा तिरस्कृत, उपेक्षित एवं अपमानित समूह को अपने मानवाधिकार तथा समतामूलक समाजव्यवस्था की स्थापना के लिए संघर्ष की गाथा है। गौतम बुध्द, कबीर, महात्मा फुले, राजर्षि शाहू तथा डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर जी की विचारधाराओं को आधार बनाकर समकालीन हिंदी दलित कविता सामाजिक विषमता एवं भेदभाव के मठों एवं गढ़ों को ध्वस्त कर सामाजिक समता की समतल भूमि का निर्माण करती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) कँवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, पृ.१५
२) संपा. राम चंद, प्रवीण कुमार, दलित चेतना की कविताएँ, पृ.०८
३) वही, पृ.३३
४) वही, पृ.७९
५) डॉ. कुसुम वियोगी, व्यवस्था के विषधर, पृ.२३
६) डॉ. सुशीला टाकभौरे, स्वाती बूँद और खारे मोती, पृ.२६
७) संपा. हरि नारायण, कथादेश, मई २००६, पृ.६४
८) संपा. राम चंद, प्रवीण कुमार, दलित चेतना की कविताएँ, पृ.१२०
९) वही, पृ.२०
१०) वही, पृ.०८
११) जयप्रकाश कर्दम, दलित कविता : समकालीन परिदृश्य, पृ.२५
१२) संपा. राम चंद, प्रवीण कुमार, दलित चेतना की कविताएँ, पृ.११८
१३) असंग घोष, समय को इतिहास लिखने दो, पृ.११-१२
१४) कमलेश भारती, जलन को दर्द कहने दो, पृ.७३

37

'असनी' (फतेहपुर) के कवि : आचार्य सेवक और उनका वाग्विलास

डॉ० उत्तम कुमार शुक्ल
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
डॉ० भीमराव आम्बेडकर राजकीय महिला
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फतेहपुर

****

वस्तुतः असनी में बुंदेलखण्ड और ब्रजमंडल को भाँति कवियों की एक दीर्घ परम्परा रही है। गंगा के तट पर बसी यह असनी फतेहपुर जनपद में स्थित है, जो अतीत के न जाने कितने इतिहास के पृष्ठों को अपने अंक में समेटे हुए आज भी अपनी मधुर स्मृतियों से इतिहासज्ञों, काव्य प्रेमियों और रसिकों को अभिभूत कर लेती है। डॉ० विपिन बिहारी त्रिवेदी ने अपने ग्रन्थ 'असनी के हिन्दी कवि' के अन्तर्गत असनी के चालीस कवियों की चर्चा की है। यहाँ के कवि–पुंगव अधिकतर ब्राह्मण, भाट और महापात्र जाति से सम्बन्धित हैं। सत्य तो यह है कि अधिकांशतः नरहरि–वंशीय कवि ही यहाँ निवास करते रहे। अब असनी पहले जैसी नहीं रही है और यहाँ के कविन्द्रों के वंशज भिन्न–भिन्न स्थानों में पहुँच गये हैं। कहा जाता है कि नरहरि महापात्र का सम्बन्ध मुगल सम्राट अकबर से था और उन्हें शाही सनदें मिली थीं, जो अब भी उनके वंशजों के पास मौजूद हैं। अपने ग्रन्थ में डॉ० त्रिवेदी ने जिन चालीस कवियों का विवरण प्रस्तुत किया है, उसमें असनी के दो घरानों, महापात्रों और बंदीजनों का ही विशेष महत्व है। इन दो घरानों में प्रथम नरहरि–हरिनाथ, अजबेश, नटेश और ब्रजेश आदि महापात्रों वाला घराना है और दूसरा नरहरि के दामाद देवकीनन्दन गढ़ोलीवाले का ठाकुर, धनीराम–सेवकराम आदि बंदीजनों का, तीसरी जाति कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की थी, जिसमें बेनी वाजपेयी,